E-Learning material prepared by Dr.Abha Jha, Asst.Prof. &Head, University Dept. of Philosophy, Dr.Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi, Jharkhand.

उपनिषदों में मोक्ष की अवधारणा

Dr.Abha Jha
Asst.Prof.&Head
Dept. of Philosophy
DSPMU,Ranchi

Abha Jha

उपनिषदों में बताया गया है कि आत्मा और परमात्मा में भेद दृष्टि ही बंधन का कारण है और आत्मा तथा परमात्मा में अभेद दृष्टि ही मोक्ष का कारण है. जीव अपने को परमात्मा से अलग मानकर संसार के भव चक्र में बार-बार भ्रमण करता है परंतु जब उसे आत्मा और परमात्मा के अभिन्न स्वरूप का ज्ञान हो जाता है तब वह अमृतत्व को प्राप्त हो जाता है. परमात्मा का साक्षात्कार कर लेने पर सारे संशय नष्ट हो जाते हैं और कर्म बंधन क्षीण पड़ जाते हैं.

उपनिषदों के अनुसार जीव में भेद की भावना ही उसका अज्ञान है और यही उसके बंधन का कारण है. उपनिषदों के अनुसार जो नाना या द्वैत या भेद का दर्शन करता है वह सदा मृत्यु के जाल में पड़ा रहता है अर्थात वह जन्म और मृत्यु के चक्र में घूमता रहता है .यही चक्र संसार है जिस समय जीव को अपने पारमार्थिक स्वरूप का अर्थात ब्रह्म और जीवात्मा के ऐक्य का साक्षात्कार हो जाता है उसी समय वह मुक्त हो जाता है. तब वह संसार से मुक्त हो जाता है अर्थात वह जन्म मृत्यु के चक्र में नहीं पड़ता. यही उसकी अमरता है .इस अमृतत्व की प्राप्ति हो जाने पर मानव जीवन सफल है

उपनिषदों के अनुसार आत्मा अपनी परमार्थिक स्वरूप में सदैव ही मुक्त है लेकिन भेद की अनुभूति ही उसे बंधन में रखती है. मुक्ति आत्मा का निजी गुण है इसलिए इसे प्राप्तस्य प्राप्ति कहा गया है. आत्मा के पारमार्थिक स्वरूप अथवा ब्रह्म

साक्षात्कार को उपनिषदों में परा विद्या कहा गया है तथा कहा गया है कि ज्ञान से ही मोक्ष मिलता है . ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती है तथा इसके अतिरिक्त मोक्ष का कोई दूसरा मार्ग नहीं है

उपनिषदों में कहा गया है कि जो ब्रह्म को जानता है वह ब्रह्म हो जाता है. जिस प्रकार सभी नदियां अपने नाम और रूप को छोड़कर समुद्र में लीन हो जाती हैं उसी प्रकार विद्वान नाम और रूप से मुक्त होकर दिव्य से भी दिव्य पुरुष को प्राप्त हो जाता है. इस प्रकार आत्मा परमात्मा के ऐक्य भाव का अनुभव ही मोक्ष है. उपनिषदों के अनुसार यह मोक्ष ज्ञान द्वारा संभव है.

उपनिषदों में मोक्ष को आनंदमय अवस्था माना गया है.मोक्ष की अवस्था में जीव का ब्रह्म से तादात्म्य हो जाता है.ब्रह्म आनंदमय है,इसलिए मोक्ष की अवस्था को भी आनंदमय माना गया है.

उपनिषदों में मोक्ष दो प्रकार के माने गए हैं पहला जीवन मुक्ति और दूसरा विदेह मुक्ति शंकर के अनुसार मोक्ष अज्ञान की निवृत्ति मात्र है. ज्ञानी जीवन रहते हुए ही मुक्ति को प्राप्त कर लेता है. जब अज्ञान का नाश हो जाता है तब जीवन मुक्ति मिलती है किंतु मोक्ष प्राप्त व्यक्ति का शरीर प्रारब्ध कर्मों के अनुसार बना हुआ रहता है किंतु शरीर रहते हुए भी मुक्त व्यक्ति सभी सभी सांसारिक प्रपंचों से दूर रहता है. संसार के सुख-दुख से तटस्थ रहता है. सांसारिक विषयों के लिए तृष्णा नहीं रह जाती है. जिस प्रकार कमल के पत्तों पर जल नहीं ठहर पाता उसी प्रकार जीवन्मुक्त पर कर्म नहीं चिपकते.जब जीव के सभी कर्म संचित, प्रारब्ध और क्रियमाण नष्ट हो जाते हैं और उसका शरीर छूट जाता है तब उसे विदेह मुक्ति की प्राप्ति होती है.

.....

Abha Jha